इकाई 21 पूँजीवाद: मार्क्स और वेबर

इकाई की रूपरेखा

21.0 उद्देश्य

21.1 प्रस्तावना

21.2 पूँजीवाद के बारे में कार्ल मार्क्स के विचार

- 21.2.1 पूँजीवाद - मानव इतिहास का एक चरण
- 21.2.2 पूँजीवाद की मुख्य विशेषताएं
- 21.2.3 पूँजीवाद और वर्ग संघर्ष

21.3 पूँजीवाद के बारे में मैक्स वेबर के विचार

- 21.3.1 तर्कसंगति के बारे में वेबर के विचार
- 21.3.2 तर्कसंगतिकरण और पाश्चात्य सभ्यता
- 21.3.3 परंपरागत और तर्कसंगत पूँजीवाद
- 21.3.4 तर्कसंगत पूँजीवाद की पूर्व-शर्तें: पूँजीवाद किस तरह के सामाजिक आर्थिक परिवेश में पनप सकता है?
- 21.3.5 तर्कसंगत पूँजीवाद के कारक
- 21.3.6 तर्कसंगत पाश्चात्य समाज का भविष्य: "लोहे का पिंजरा"

21.4 मार्क्स और वेबर के विचारों की तुलना

- 21.4.1 दृष्टिकोण में अंतर
- 21.4.2 पूँजीवाद का उदय
- 21.4.3 पूँजीवाद के परिणाम और पूँजीवाद व्यवस्था को बदलने का उपाय

21.5 सारांश

21.6 शब्दावली

21.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

21.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

21.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आपके लिए संभव होगा

- इतिहास के एक चरण के रूप में पूँजीवाद के बारे में कार्ल मार्क्स के विचारों को संक्षेप में समझना
- पूँजीवाद के बारे में मैक्स वेबर के विचारों का विवेचन करना
- पूँजीवाद के विश्लेषण में इन दोनों विद्वानों के विचारों में समानताओं और अंतर को समझना।

21.1 प्रस्तावना

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से आपको उस सामाजिक-आर्थिक संदर्भ की जानकारी मिल चुकी है जिसके अंतर्गत समाजशास्त्र के संस्थापकों ने अध्ययन किया और इस विषय को अपने स्थायी तथा महत्वपूर्ण योगदान से समृद्ध किया। आपने यह भी पढ़ा कि इन विद्वानों ने एक ऐसे दौर में काम

किया जिसमें समाज अत्यंत तेज़ गति से बदल रहा था। तेज़ी से बदलते विश्व की समस्याओं की छाप इन विद्वानों के अध्ययन और विचारों पर स्पष्ट दिखाई देती है।

इकाई 20 में हमने श्रम विभाजन के बारे में एमिल दर्खाइम और मैक्स वेबर की धारणाओं का अध्ययन किया। इस इकाई में पूँजीवाद के बारे में कार्ल मार्क्स और मैक्स वेबर के विचारों के बारे में बताया जाएगा। भाग 21.2 में कार्ल मार्क्स के विचार प्रस्तुत किये जाएंगे। भाग 21.3 में पूँजीवाद के बारे में मैक्स वेबर का दृष्टिकोण प्रस्तुत किया जाएगा। अंतिम भाग (21.4) में इन दोनों विद्वानों के विश्लेषण में समानताओं और अंतर पर विचार किया जाएगा।

21.2 पूँजीवाद के बारे में कार्ल मार्क्स के विचार

खंड 3 में आपने पढ़ा कि कार्ल मार्क्स के अनुसार आर्थिक गतिविधि और आर्थिक ढांचा ही सामाजिक जीवन का आधार है। आर्थिक ढांचे में उत्पादन की एक विशिष्ट प्रणाली तथा उत्पादन के संबंध निहित है। उत्पादन की प्रणाली ऐतिहासिक काल खंडों में समान नहीं होती। यह इतिहास के परिवर्तन के साथ-साथ बदलती है। मार्क्स और एंगल्स ने विश्व इतिहास को विशिष्ट चरणों में विभाजित किया। इनमें से प्रत्येक चरण का आर्थिक स्वरूप अलग-अलग था। इस आर्थिक ढांचे से ही अन्य सामाजिक उपव्यवस्थाओं जैसे राजनैतिक व्यवस्था, धर्म, नैतिक मूल्य और संस्कृति आदि का स्वरूप निर्धारित होता है। इन उप व्यवस्थाओं को अधिसंरचना (superstructure) कहा जाता है। मार्क्स और एंगल्स ने इतिहास को निम्न चार चरणों में बांटा है। (i) प्रारंभिक साम्यवादी (communal) चरण (ii) दास-प्रथा पर आधारित प्राचीन चरण (iii) सामंतवादी चरण (iv) पूँजीवादी चरण। उत्पादन की विशिष्ट प्रणालियों के अनुसार मानव इतिहास के विभिन्न चरणों का अध्ययन मार्क्स के ऐतिहासिक भौतिकवाद के सिद्धांत का आधार है।

जैसा कि बताया जा चुका है, इनमें से हर चरण में उत्पादन की एक ख़ास प्रणाली है। प्रत्येक चरण को इतिहास की एक कड़ी माना जाता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हर चरण के अपने अंतर्विरोध और तनाव होते हैं। इन अंतर्विरोधों के एक सीमा से ज्यादा बढ़ जाने पर व्यवस्था ही बिखर जाती है और पिछले चरण के गर्भ से नया चरण जन्म लेता है।

21.2.1 पूँजीवाद - मानव इतिहास का एक चरण

मार्क्स के ऐतिहासिक विश्लेषण के अनुसार, पूँजीवादी चरण सामंती व्यवस्था के अंतर्विरोधों का सहज परिणाम है। सामंती व्यवस्था में कृषि दासों का ज़मीदारों (lords) द्वारा शोषण होता था। यह सामंती व्यवस्था जब अपने तनावों से बिखर गई तो ज़मीदारों के कब्ज़े से बड़ी संख्या में काश्तकार (tenants) मुक्त हुए। ये लोग निरंतर बढ़ते हुए नगरों में बसे, इससे वस्तुओं के उत्पादन के लिए बड़ी संख्या में श्रमिक उपलब्ध हुए। नयी मशीनों का विकास, फ़ैक्टरी प्रणाली और बड़े पैमाने पर उत्पादन से नयी आर्थिक प्रणाली पूँजीवाद का जन्म हुआ।

यह बात हमेशा ध्यान में रखनी चाहिए कि मार्क्स ने पूँजीवाद को ऐतिहासिक दृष्टिकोण से देखा। मार्क्स ने अपने सिद्धांत में समाज में अलग-अलग व्यक्ति को केन्द्र बिंदु नहीं बनाया बल्कि पूरे समाज के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। मार्क्स के अनुसार, पूँजीवाद मानव समाज के विकास का ऐसा चरण है जिसका जन्म उसके पिछले चरण के अंतर्विरोधों के कारण हुआ। इस चरण में भी अपने अंतर्विरोध है, जिनके बारे में आगे चर्चा की जाएगी। पूँजीवाद व्यवस्था में अंतर्निहित अंतर्विरोधों से एक नये चरण के जन्म के लिये योग्य परिस्थितियां बनेंगी। मार्क्स के अनुसार यह आदर्श समाज यानी साम्यवादी (communist) समाज होगा। इस समाज में पिछले चरणों की तरह अंतर्विरोध और तनाव नहीं होंगे।

21.2.2 पूँजीवाद की मुख्य विशेषताएं

टॉम बॉटोमोर (1973) ने अपनी पुस्तक *डिक्शनरी ऑफ़ मार्क्सिस्ट थॉट* में पूँजीवाद की कुछ प्रमुख विशेषताओं की चर्चा की है। उत्पादन की प्रणाली के रूप में मार्क्स ने पूँजीवाद की निम्न विशेषताएं स्पष्ट की हैं।

i) **उत्पादन निजी इस्तेमाल की बजाय बिक्री के लिए होता है:** पूँजीवाद गुज़ारा चलाने भर के साधन जुटाने वाली आर्थिक प्रणाली के विकास की अगली कड़ी है। पूर्व पूँजीवादी आर्थिक प्रणालियों में उत्पादन प्राय: सीधे उपभोग के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए, कृषि-केन्द्रित आर्थिक प्रणालियों में किसानों ने अपने इस्तेमाल के लिए ही फ़सलें उगाई हैं। थोड़ा सा हिस्सा ही बिक्री के लिए बच जाता है। ऐसा इसलिए होता है कि तकनीकी ज़्यादा उन्नत नहीं होती और घर-परिवार के लोग ही सीमित संख्या में काम करते हैं। पूँजीवाद व्यवस्था की स्थिति भिन्न है। इसमें बहुत बड़ी संख्या में श्रमिकों को फ़ैक्टरी में काम करना होता है। उन्हें मशीनों की मदद से और श्रम-विभाजन द्वारा बड़ी मात्रा में वस्तुओं का उत्पादन करना होता है। यह उत्पादन बाज़ार में बिक्री के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए, साबुन बनाने वाली फ़ैक्टरी में उत्पादकों के अपने इस्तेमाल के लिए साबुन नहीं बनाया जाता बल्कि यह बाज़ार में बिक्री के लिए बनाया जाता है।

ii) **श्रम-शक्ति ख़रीदी और बेची जाती है:** मार्क्स का कहना है कि पूँजीवादी प्रणाली में श्रमिक को केवल श्रम-शक्ति के रूप में आंका जाता है। पूँजीपति या मालिक उनकी श्रम-शक्ति को मज़दूरी देकर खरीदते हैं। श्रमिक अपनी श्रम-शक्ति को बेचने या न बेचने को क़ानूनी तौर से स्वतंत्र है। मानव इतिहास के प्राचीन चरणों की तरह, श्रमिकों से दासों या कृषि-दासों की तरह ज़बरन काम नहीं कराया जाता। उनकी आर्थिक ज़रूरतें ही उन्हें काम करने को विवश करती हैं। उनके सामने दो ही विकल्प हैं - मज़दूरी करें या भूखे रहें। अत: भले ही श्रमिक पूँजीपति से अनुबंध करने के लिए क़ानूनी तौर से स्वतंत्र है पर उनकी दो वक़्त की रोज़ी-रोटी की समस्या उन्हें अपना श्रम बेचने पर मजबूर करती है।

iii) **लेन-देन मुद्रा में होता है:** हमने यह पढ़ा कि उत्पादन बिक्री के लिए होता है और यह बिक्री मुद्रा के ज़रिए होती है। मुद्रा ही वह सामाजिक संबंध है जिससे पूँजीवादी प्रणाली के विभिन्न तत्व एक-दूसरे से जुड़े हैं। इसीलिए इस प्रणाली में बैंकों तथा वित्तीय संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है।

iv) **पूंजीपति का उत्पादन की प्रक्रिया पर नियंत्रण:** यह विशेषता भी मुद्रा संबंध से जुड़ी है। उत्पादन का मूल्य, श्रमिकों की मज़दूरी, वित्तीय निवेश की रक़म आदि सभी फ़ैसले पूँजीपति ही करता है।

v) **पूँजीपति का वित्तीय निर्णयों पर नियंत्रण:** इसका संबंध उत्पादों का नियंत्रण से है। उत्पादकों को मूल्य निर्धारण, श्रमिकों की मजदूरी, वित्तीय निवेश आदि निर्णय पूँजीपति स्वयं लेता है।

vi) **प्रतिस्पर्धा:** चूंकि उत्पादन का प्रमुख उद्देश्य बिक्री है, अत: पूँजीपतियों के बीच में प्रतिस्पर्धा होना स्वाभाविक है। किसका उत्पादन बाजार में सबसे ज़्यादा बिकेगा? किसे सबसे ज़्यादा मुनाफ़ा होगा? इन सवालों से जो स्थिति पैदा होती है उसमें सारे पूँजीपति दूसरे से आगे निकलना चाहते हैं। इसके परिणामस्वरूप नये-नये आविष्कार और नयी तकनीकी का इस्तेमाल होता है। साथ-साथ प्रतिस्पर्धा से एकाधिकार (monopoly) वाली फ़र्में या समान स्वार्थ के लिए मिल जाने वाले **व्यापारी समूह (cartels)** ही भी पनप सकते हैं। ऐसी स्थिति में एक उत्पादक या उत्पादकों का समूह अन्य प्रतियोगियों को पछाड़ कर या जबरन हटा

कर बाज़ार पर अपना दबदबा कायम कर लेता है। इससे पूँजी का केंद्रीकरण कुछ गिने-चुने लोगों के हाथों में हो जाता है, अर्थात् पूँजी कुछ ही लोगों के पास रह जाती है।

इस प्रकार मार्क्स के अनुसार पूँजीवाद ऐसी व्यवस्था है जिसमें शोषण, असमानता और वर्गों का ध्रुवीकरण अपने चरम पर होता है। इसका मतलब है कि उत्पादन के साधन के मालिकों (अर्थात् बुर्जुआ वर्ग) और श्रमिकों (अर्थात् सर्वहारा वर्ग) के बीच सामाजिक अंतर बढ़ता है। पूँजीवाद के संबंध में मार्क्स की "वर्ग संघर्ष" की धारणा अत्यंत महत्वपूर्ण है। पूँजीवाद की अवधारणा को आत्मसात करने हेतु सोचिए और करिए 1 को पूरा करें।

सोचिए और करिए 1

पूँजीवाद की मुख्य विशेषताओं से संबद्ध उपभाग (21.2.1) को ध्यान से पढ़ें। क्या आपको अपने समाज में ऐसी विशेषताएं नज़र आती हैं? एक पृष्ठ में अपने विचार लिखें और संभव हो तो अपने अध्ययन केन्द्र में अन्य विद्यार्थियों के विचारों से इनकी तुलना करें।

21.2.3 पूँजीवाद और वर्ग संघर्ष

मार्क्स के अनुसार, मानव समाज का इतिहास वर्ग-संघर्ष का इतिहास है। मानव इतिहास के हर चरण में समाज दो वर्गों में बंटा रहा है - साधन संपन्न और अभावग्रस्त। इनमें से साधनसंपन्नों का प्रभुत्व रहता है और अभावग्रस्तों का दमन होता है।

पूँजीवाद के बने रहने के मुख्य आधार हैं - निजी संपत्ति, फ़ैक्टरी प्रणाली के अंतर्गत वस्तुओं का बड़े पैमाने पर मुनाफ़े के लिए उत्पादन और ऐसा श्रमिक वर्ग जो अपनी श्रम-शक्ति बेचने पर मजबूर है। इन्हीं पूँजीवादी विशेषताओं से समाज में वर्गों के बीच दूरी बढ़ती रहती है और **वर्गों का ध्रुवीकरण** होता है। जैसे-जैसे पूँजीवाद बढ़ता जाता है, वर्गों के बीच अंतर भी बढ़ता जाता है। बुर्जुआ और सर्वहारा वर्गों के हित भी अलग-अलग होते जाते हैं। सर्वहारा एक जुट हो जाते हैं क्योंकि वे एक सी समस्याओं से जूझ रहे होते हैं, जिनका समाधान भी समान होता है। इसी प्रकार सर्वहारा वर्ग समाज हितों के लिए संघर्षरत वर्ग बन जाता है। मार्क्स के अनुसार, सर्वहारा की क्रांति से इतिहास के नये चरण - "साम्यवाद" का जन्म होगा। इस व्यवस्था में श्रमिक ही उत्पादन के साधनों के स्वामी होंगे, पूँजीवाद के अंतर्विरोध समाप्त होंगे और एक नयी सामाजिक व्यवस्था स्थापित होगी।

संक्षेप में, कार्ल मार्क्स पूँजीवाद को मानव इतिहास की ऐसी स्थिति मानता है जो पिछली स्थिति के अंतर्विरोधों से पनपी है। पूँजीवाद के भी अपने अंतर्विरोध हैं। इस ऐतिहासिक चरण में वर्ग संघर्ष सबसे तीव्र होता है, क्योंकि उत्पादन के साधन कुछ ही हाथों में केंद्रित होते हैं। श्रमिकों को मात्र श्रम-शक्ति के रूप में आंका जाता है जिसे मज़दूरी द्वारा खरीदा-बेचा जा सकता है। इस प्रणाली की असमानताओं से वर्गों का ध्रुवीकरण होता है। सर्वहारा वर्ग को अहसास होता है कि उसके समान हित और समान समस्याएं है। वह इन समस्याओं को सुलझाने का प्रयास करता है। सर्वहारा अपने हितों के लिए संघर्षरत वर्ग बन जाते हैं। इनकी मुक्ति क्रांति से होगी। सर्वहारा की क्रांति से एक नयी सामाजिक व्यवस्था साम्यवाद का जन्म होगा जिसमें उत्पादन के साधनों पर श्रमिकों का ही स्वामित्व होगा।

अगले भाग में पूँजीवाद के बारे में वेबर के विचारों पर चर्चा की जाएगी। अगले भाग (21.3) पर जाने से पहले बोध प्रश्न 1 को पूरा करें।

बोध प्रश्न 1

i) निम्नलिखित वाक्यों में से सही या ग़लत बताइए।

क) मार्क्स के अनुसार, प्रारंभिक साम्यवाद चरण के बाद पूँजीवादी व्यवस्था का जन्म होता है। सही/ग़लत

ख) केवल पूँजीवाद चरण के ही अपने अंतर्विरोध होते हैं। सही/ग़लत

ग) पूँजीवादी आर्थिक प्रणाली रोजी-रोटी के साधन भर जुटाने वाली आर्थिक प्रणाली है। सही/ग़लत

घ) पूँजीवादी प्रणाली में श्रमिक दास और कृषि दासों की तरह ही काम करने पर विवश होते है। सही/ग़लत

च) पूँजीवाद के बढ़ने के साथ-साथ वर्गों के बीच संबंध घनिष्ठ होते जाते हैं। सही/ग़लत

ii) निम्नलिखित प्रश्नों का तीन पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

क) कार्ल मार्क्स ने "सर्वहारा क्रांति" का समर्थन क्यों किया?

.....

.....

.....

ख) पूँजीवादी चरण में बैंक और वित्तीय संस्थाएं महत्वपूर्ण क्यों हो जाती है?

.....

.....

.....

ग) पूँजीवाद में वर्गों का ध्रुवीकरण क्यों होता है?

.....

.....

.....

21.3 पूँजीवाद के बारे में मैक्स वेबर के विचार

पूँजीवाद पर मैक्स वेबर द्वारा किये गए विश्लेषण की इन उप भागों में चर्चा की जाएगी। इस अध्ययन से स्पष्ट होगा कि मैक्स वेबर ने पूँजीवाद का स्वतंत्र और अधिक जटिल विश्लेषण प्रस्तुत किया। वेबर ने एक विशिष्ट प्रकार के पूँजीवाद "तर्कसंगत पूँजीवाद" का वर्णन किया। उसके अनुसार "तर्कसंगत पूँजीवाद" पाश्चात्य देशों (पश्चिम यूरोप और उत्तरी अमरीका के देश) में पूरी तरह विकसित हुआ। तर्कसंगति की अवधारणा और उससे संबंधित प्रक्रिया मूलत: पाश्चात्य है। "तर्कसंगति" और "तर्कसंगत पूँजीवाद" के बीच संबंध को समझना ज़रूरी है। इसीलिए, सबसे पहले तर्क संगति के बारे में मैक्स वेबर के विचारों की चर्चा की जाएगी।

21.3.1 तर्कसंगति के बारे में वेबर के विचार

पूँजीवाद के बारे में मैक्स वेबर के विचारों को समझने के लिए तर्कसंगति की उसकी अवधारणा को समझना ज़रूरी है। पश्चिमी देशों में तर्कसंगति का विकास पूँजीवाद से जुड़ा रहा है। तर्कसंगति तथा तर्कसंगतिकरण से वेबर का क्या तात्पर्य है? आपने खंड 4 की इकाई 15 में पढ़ा था कि

तर्कसंगति वैज्ञानिक विशिष्टीकरण का परिणाम है जो पाश्चात्य संस्कृति की अनोखी विशेषता है। यह बाहरी दुनिया पर स्वामित्व और नियंत्रण प्राप्त करने से संबंधित है। इसके अंतर्गत मानव जीवन को सुसंगठित करने का प्रयास है जिसमें कार्यकुशलता बेहतर हो और उत्पादकता बढ़े।

संक्षेप में, तर्कसंगत बनाने का तात्पर्य मानवीय गतिविधियों को ऐसे नियमित और निर्धारित तरीके से व्यवस्थित और समन्वित करना है जिससे परिवेश पर मानवीय नियंत्रण क़ायम हो सके। घटना-क्रम को प्रकृति या क़िस्मत के भरोसे नहीं छोड़ा जाता। लोगों को अपने आस-पास के परिवेश के व्यवस्था की ऐसी समझ हो जाती है कि प्रकृति रहस्मय और अनिश्चित नहीं रह जाती। विज्ञान और तकनीकी, लिखित नियमों और क़ानूनों के द्वारा मानवीय गतिविधियाँ सुसंबद्ध हो जाती हैं। रोज़मर्रा की जिंदगी से एक उदाहरण लें। किसी कार्यालय में एक पद रिक्त होता है। इस पर भर्ती का एक तरीक़ा यह है कि अपने किसी मित्र या संबंधी को नियुक्त कर दिया जाए। लेकिन वेबर के अनुसार यह तर्कसंगत नहीं होगा। दूसरा तरीक़ा यह है कि पद समाचार-पत्रों में विज्ञापित किया जाए, आवेदन करने वालों के लिए प्रतियोगी परीक्षा आयोजित की जाए, फिर साक्षात्कार परीक्षा हो और सर्वोत्तम परिणाम पाने वाला उम्मीदवार चुन लिया जाए। इस तरीक़े में कुछ नियमों और आचारों का पालन किया गया है। पहले तरीक़े में नियमित प्रक्रिया नहीं थी, जो दूसरे में अपनायी गयी। वेबर के अनुसार यह प्रक्रिया तर्कसंगतिकरण का उदाहरण कहलाती है।

21.3.2 तर्कसंगतिकरण और पाश्चात्य सभ्यता

वेबर के अनुसार, तर्कसंगतिकरण पश्चिमी सभ्यता का सबसे विशिष्ट लक्षण है। तर्कसंगति द्वारा प्रभावित पश्चिम देशों में ऐसी अनेक विशेषताएँ शामिल हैं जो विश्व के किसी और भाग में एक साथ कभी नहीं पायी गई हैं। ये विशेषताएं निम्न हैं।

i) **विज्ञान**, यानी पश्चिमी देशों में सुविकसित, प्रमाणित किये जा सकने वाले ज्ञान का भंडार

ii) **एक तर्कसंगत राज्य**, जिसमें विशिष्टीकृत संस्थाएं, लिखित नियम तथा राजनीतिक गतिविधि को नियमित करने के लिए संविधान हो।

iii) **कलाएं**, जैसे पाश्चात्य संगीत, जिसमें स्वरलिपि प्रणाली हो, अनेक वाद्यों का क्रमबद्ध इस्तेमाल हो। इस स्तर की नियमितता अन्य संगीत प्रणालियों में नहीं है। आपको पश्चिमी संगीत के बारे में वेबर के विश्लेषण की और अधिक जानकारी कोष्ठक 21.1 में मिलेगी।

iv) **अर्थव्यवस्था**: तर्कसंगत पूँजीवाद में यह स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। अगले उपभागों में इन सब का विस्तृत विवरण होगा।

तर्कसंगति जीवन के कुछ पक्षों तक ही सीमित नहीं है। यह जीवन के हर क्षेत्र से जुड़ी है। पाश्चात्य समाज का यह सबसे विशिष्ट लक्षण है (देखें फ्राएंड 1972: 17-24)।

कोष्ठक 21.1: पाश्चात्य संगीत को तर्कसंगत बनाने के प्रयास

1911 में वेबर ने एक पुस्तिका लिखी *रेशनल एंड सोशल फ़ाउंडेशन म्यूज़िक*। इसमें उसने पाश्चात्य संगीत के विकास में बढ़ती तर्कसंगति का विश्लेषण किया। पाश्चात्य संगीत में सरगम का क्रम (scale) आठ सुरों (octave) में बंटा है और हर सुर की बारह तानें (notes) होती हैं। मंद्र तथा तार स्वरों में समान ध्वनियों वाली तानें है। इसमें संगीत-लहरी एक नियमित क्रम में आगे या पीछे लायी जा सकती है। पाश्चात्य संगीत में "बहुस्वरता" (polyvocality) भी होती है अर्थात् अनेक आवाज़ों में गायन तथा अनेक वाद्यों का वादन एक साथ एक ही तान में होता है। वेबर के अनुसार "बहुस्वरता" से वाद्यवृंद (Orchestra) बनता है और इस तरह पाश्चात्य संगीत एक संगठित प्रयास बन जाता है। संगीतकारों की

विशिष्ट भूमिका का तर्कसंगत ढंग से ताल मेल बिठाया जाता है। इस तरह संगीत भी नौकरशाही की तरह सुसंबद्ध हो जाता है। इसके अलावा पाश्चात्य संगीत के अंकन की अपनी स्वरलिपि प्रणाली है। संगीतकार अपनी संगीत-रचनाओं को इन स्वरलिपि प्रणाली में लिख लेते हैं और इस प्रकार उनके कार्य को मान्यता मिलती है, उन्हें सर्जन कलाकार के रूप में मान्यता मिलती है और अन्य संगीतकारों के लिए उनकी रचनाएं आदर्श बन जाती हैं। भावी संगीतकार उनकी नक़ल करने और उनसे भी आगे निकलने का प्रयास करते हैं। इस तरह पाश्चात्य संगीत एक निश्चित क्रम में व्यवस्थित और संगठित है। इसमें गतिशीलता है और एक-दूसरे से बेहतर कर दिखाने की प्रतिस्पर्धा है। एक तरह से संगीतकार संगीत के क्षेत्र के उद्यमी हैं।

आइए, अब देखें कि वेबर द्वारा दी गई तर्कसंगत अर्थव्यवस्था और तर्कसंगत पूँजीवाद अन्य आर्थिक प्रणालियों से किस प्रकार भिन्न हैं और उसने पूँजीवाद के विकास में सहायक सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था का किस प्रकार विवेचन किया।

21.3.3 परंपरागत और तर्कसंगत पूँजीवाद

खंड 4 की इकाई 15 में आपने "परंपरागत" और "तर्कसंगत" पूँजीवाद के अंतर का संक्षेप में अध्ययन किया। क्या पूँजीवाद मात्र लाभ कमाने वाली प्रणाली है? क्या पूँजीवाद के लक्षण मात्र लालच और धन-दौलत की लालसा ही है? इस रूप में पूँजीवादी प्रणाली दुनिया के अनेक भागों में मौजूद थी। प्राचीन बेबीलोन, भारत, चीन और मध्यकालीन यूरोप के व्यापारियों की शक्तिशाली श्रेणियों वाली प्रणाली भी इस अर्थ में पूँजीवादी प्रणाली ही थी। लेकिन ये तर्कसंगत पूँजीवाद नहीं था।

परंपरागत पूँजीवादी प्रणाली में ज़्यादातर परिवार आत्म-निर्भर थे और अपनी बुनियादी ज़रूरत की वस्तुओं का स्वयं उत्पादन कर लेते थे। परंपरागत पूँजीवाद में केवल विलासिता की वस्तुओं का व्यापार होता था। बिक्री की वस्तुएं बहुत थोड़ी होती थीं और कुछ गिने-चुने लोग ही ख़रीदार होते थे। विदेश में व्यापार करना जोखिम भरा था। मुनाफ़े के लालच में ये व्यापारी बहुत ज़्यादा क़ीमत पर वस्तुएं बेचते थे। व्यापार जुए जैसा था। अच्छा धंधा होने पर भारी लाभ होता था। पर कामयाबी न मिलने पर नुक़सान भी बहुत ज़्यादा होता था।

आधुनिक या तर्कसंगत पूँजीवाद विलासिता की कुछ दुर्लभ वस्तुओं के उत्पादन या बिक्री तक सीमित नहीं है। इसमें रोज़मर्रा की ज़रूरत की तमाम साधारण चीजें खाद्य पदार्थ कपड़े, बर्तन, औज़ार आदि शामिल हैं। परंपरागत पूँजीवाद के विपरीत, तर्कसंगत पूँजीवाद गतिशील है और इसका दायरा फैलता जा रहा है। नये आविष्कार, उत्पादन के नये तरीक़े और नयी-नयी वस्तुए निरंतर विकसित की जा रही हैं। तर्कसंगत पूँजीवाद बड़े पैमाने पर उत्पादन और वितरण पर टिका है। वस्तुओं का लेन-देन पूर्व-निर्धारित और बार-बार दोहराए जाने वाले समान तरीक़े से ही होता है। व्यापार अब जुआ नहीं है। आधुनिक पूँजीपति कुछ चुने हुए लोगों को ऊँची क़ीमत पर चुनी हुई वस्तुएं नहीं बेचते। आधुनिक पूँजीवाद का लक्ष्य ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को ज़्यादा से ज़्यादा वस्तुएं उचित दामों पर बेचना है।

संक्षेप में, परंपरागत पूँजीवाद कुछ उत्पादकों, कुछ वस्तुओं और कुछ ख़रीदारों तक सीमित है। उसमें जोखिम बहुत ज़्यादा है। व्यापार जुए जैसा है। दूसरी ओर, तर्कसंगत पूँजीवाद में सभी वस्तुओं को बिक्री-योग्य बनाने का लक्ष्य रहता है। इसमें बड़े पैमाने पर उत्पादन और वितरण होता है। व्यापार नियमबद्ध होता है। इस चर्चा में, हमने परंपरागत और तर्कसंगत पूँजीवाद के अंतर को समझा। तर्कसंगत पूँजीवाद किस प्रकार के सामाजिक-आर्थिक वातावरण में पनपता है? अब तर्कसंगत पूँजीवाद के विकास के लिए अनिवार्य परिस्थितियों की चर्चा की जाएगी।

निम्नलिखित प्रश्नों का तीन पंक्तियों में उत्तर दें।

i) तर्कसंगतिकरण से वेबर का क्या तात्पर्य है?

.....

.....

.....

ii) परंपरागत पूँजीवाद में व्यापार कैसे किया जाता था?

.....

.....

.....

21.3.4 तर्कसंगत पूँजीवाद की पूर्व-शर्तें: पूँजीवाद किस तरह के सामाजिक-आर्थिक परिवेश में पनप सकता है?

वेबर के अनुसार, आधुनिक पूँजीवाद का बुनियादी सिद्धांत समाज की रोज़मर्रा की ज़रूरतें पूरी करने वाले उत्पादक उद्यम का तर्कसंगत संगठन है। इस इकाई में तर्कसंगत पूँजीवाद के लिए ज़रूरी पूर्व-शर्तों और उसके लिए उचित सामाजिक-आर्थिक परिवेश की चर्चा की जाएगी।

i) **उत्पादन के भौतिक संसाधनों पर निजी स्वामित्व:** इन भौतिक संसाधनों में भूमि, मशीनें, कच्चा माल, फैक्टरी की इमारत आदि शामिल हैं। उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण होने से ही निजी उत्पादक व्यापार या उद्यम को संगठित कर सकते हैं और उत्पादन के साधनों को व्यवस्थित कर वस्तुओं के उत्पादन की प्रक्रिया शुरू कर सकते हैं।

ii) **मुक्त बाज़ार:** व्यापार पर कोई रोक-टोक नहीं होनी चाहिए। राजनैतिक स्थिति आम तौर पर शांतिपूर्ण होनी चाहिए। इससे आर्थिक गतिविधियां बिना किसी बाधा के चल सकेंगी।

iii) **उत्पादन और वितरण की तर्कसंगत तकनीक:** इस में उत्पादन बढ़ाने के लिए मशीनों का इस्तेमाल शामिल है। साथ ही, इसमें वस्तुओं के उत्पादन और वितरण में विज्ञान और तकनीकी का प्रयोग भी शामिल है ताकि व्यापक मात्रा में विविध प्रकार की वस्तुएं ज़्यादा से ज़्यादा कुशलता से तैयार की जा सकें।

iv) **तर्कसंगत कानून:** समाज के सभी लोगों पर लागू होने वाली क़ानूनी प्रणाली होनी चाहिए। इससे आर्थिक अनुबंध करने की प्रक्रिया सरल हो जाती है। हर व्यक्ति के कुछ क़ानूनी दायित्व और अधिकार हो जाते हैं और इन्हें लिखित नियमों के रूप में संहिताबद्ध कर लिया जाता है।

v) **स्वतंत्र श्रमिक:** श्रमिकों को अपनी इच्छानुसार कहीं भी और कभी भी काम करने की क़ानूनी रूप से स्वतंत्रता होती है। मालिक से उनके संबंध अनिवार्य रूप से बाध्यकारी नहीं, बल्कि स्वेच्छा से किये गये अनुबंध पर आधारित होते हैं। लेकिन मार्क्स की तरह वेबर भी इस बात को स्वीकार करता है कि क़ानूनन स्वतंत्र होते हुए भी आर्थिक दबाव और भूख उन्हें झुकने पर मजबूर कर देती है। उनकी स्वतंत्रता कहने भर की है। वास्तव में तो ज़रूरत उन्हें श्रम करने पर विवश करती है।

vi) **अर्थव्यवस्था का वाणिज्यिक स्वरूप:** तर्कसंगत पूँजीवादी व्यवस्था में यह पाया जाता है कि हर व्यक्ति उद्यम में भाग ले सकता है। हर व्यक्ति को **स्टॉक, शेयर या बांड** खरीदने का अधिकार होता है। इस प्रकार उद्यम में जन सामान्य भाग ले सकते हैं।

संक्षेप में, तर्कसंगत पूँजीवाद ऐसी आर्थिक प्रणाली है जिसमें उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व तथा नियंत्रण होता है। तर्कसंगत तकनीकी की मदद से वस्तुओं का व्यापक स्तर पर उत्पादन होता है तथा बाज़ार में बिना किसी रोक-टोक से व्यापार होता है। श्रमिक नियोजकों से अनुबंध करते हैं क्योंकि वे क़ानूनी तौर पर स्वतंत्र होते हैं। सभी लोगों पर समान क़ानूनी प्रणाली लागू होती है, इससे व्यापारिक अनुबंध करना आसान हो जाता है, इस प्रकार इस प्रणाली के लक्षण अपनी पूर्ववती प्रणालियों से भिन्न हैं।

अब इस बात की चर्चा की जाएगी कि वेबर ने आर्थिक प्रणाली के तर्कसंगत होते चले जाने की कैसे व्याख्या की। तर्कसंगत पूँजीवाद का विकास कैसे हुआ? पिछले भाग में आपने पढ़ा कि कार्ल मार्क्स ने पूँजीवाद के विकास को कैसे समझाया। मार्क्स ने उत्पादन की प्रणाली में परिवर्तन के आधार पर इसकी व्याख्या की। क्या मैक्स वेबर भी मूलत: आर्थिक आधार पर ही ज़ोर देता है? क्या वह सांस्कृतिक और राजनैतिक कारकों पर भी ध्यान देता है? अगले उप-भाग में यह बताया जाएगा कि किस तरह वेबर पूँजीवाद को एक जटिल अवधारणा मानता है और उसके अनुसार किसी एक कारक के आधार पर अथवा **मशीनी या एककारणीय संबंध** से इसे नहीं समझा जा सकता। तर्कसंगत पूँजीवाद के विकास के पीछे अनेक कारक हैं। इन सभी कारकों की आपसी क्रिया-प्रतिक्रिया से तर्कसंगत पूँजीवाद के लक्षण विकसित होते हैं। आइए अब वेबर द्वारा बताए गए आर्थिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक अथवा धार्मिक कारकों पर नज़र डालें।

21.3.5 तर्कसंगत पूँजीवाद के कारक

कुछ विद्यार्थी और विद्वानों के मन में आमतौर से यह धारणा है कि वेबर पूँजीवाद के विश्लेषण में आर्थिक कारकों की अनदेखी करता है। यह सही नहीं है। सच्चाई यह है कि वह आर्थिक कारकों पर मार्क्स के बराबर ज़ोर नहीं देता परंतु आर्थिक कारकों के महत्व को नकारता भी नहीं। अब पूँजीवाद के विकास में आर्थिक और राजनैतिक कारकों की भूमिका के बारे में वेबर के विचारों की संक्षिप्त चर्चा की जाएगी।

i) **आर्थिक कारक**: वेबर ने यूरोप में "घरेलू कामकाज" और व्यापार के बीच धीरे-धीरे आये अंतर का उल्लेख किया है। घरेलू इस्तेमाल के लिए छोटे पैमाने पर वस्तुओं के उत्पादन की जगह फ़ैक्टरियों के बड़े पैमाने पर उत्पादन होने लगा। घरेलू कामकाज और कारखानों के काम के बीच अंतर बढ़ने लगा। परिवहन और संचार के विकास में अर्थव्यवस्था को तर्कसंगत रूप देने में मदद मिली। समान मुद्रा के चलन तथा **बही-खाता** प्रणाली से आर्थिक लेन-देन आसान हो गया।

ii) **राजनैतिक कारक**: आधुनिक पाश्चात्य पूँजीवाद का विकास **नौकरशाही पर आधारित तर्क-विधिक राज्य** के विकास से जुड़ा है। इसमें नागरिकता की धारणा महत्वपूर्ण हो जाती है। नागरिकों के कुछ वैधानिक अधिकार और कर्तव्य होते हैं। नौकरशाही पर आधारित राज्य में सामंतवादी व्यवस्था टूटती है और इस तरह पूँजीवाद बाज़ार के लिए मुक्त भूमि और श्रम उपलब्ध होते हैं। ऐसी राज्य व्यवस्था विशाल क्षेत्र में शांतिपूर्वक राजनैतिक नियंत्रण बनाये रखने के अनुकूल होती है। फलस्वरूप व्यापरिक गतिविधियों को सुचारू रूप से चलाए जाने का अपेक्षाकृत शांतिपूर्ण राजनैतिक वातावरण मिल जाता है। तर्कसंगत नौकरशाही राज्य व्यवस्था में संपूर्ण रूप से विकसित हो जाती है। इस प्रकार की राज्य व्यवस्था में तर्कसंगत पूँजीवाद पनप सकता है।

हमने पढ़ा कि वेबर किस तरह पूँजीवाद के विकास में आर्थिक तथा राजनैतिक कारकों के योगदान का विवरण करता है। हमने यह समझा कि कैसे घरेलू उत्पादन के स्थान पर फ़ैक्टरी में उत्पादन, मुद्रा का व्यापक चलन, संचार के साधनों और तकनीकी की सहायता से नयी आर्थिक प्रणाली विकसित होती है। हमने यह भी देखा कि किस प्रकार नौकरशाही पर आधारित राज्य

व्यापार के फलने-फूलने के लिए उपयुक्त राजनैतिक वातावरण तथा वैधानिक अधिकार और सुरक्षा प्रदान करता है।

लेकिन वेबर के अनुसार केवल यही व्याख्याएं पर्याप्त नहीं है। उसके अनुसार मानव-समुदाय अपनी परिस्थितियों को जिस रूप में समझता है, उन्हें जो अर्थ देता है; मानवीय व्यवहार उसी का प्रतिबिंब है। मानवीय व्यवहार के पीछे एक विशिष्ट नैतिकता तथा विश्व के प्रति एक विशिष्ट दृष्टिकोण होता है। इसी से मनुष्यों की गतिविधियां प्रेरित होती हैं। सबसे प्राचीन पश्चिमी पूँजीपतियों के व्यवहार के पीछे कौन सी नैतिकता थी? परिवेश के प्रति उनकी धारणा क्या थी और वे इस परिवेश में अपनी भूमिका किस प्रकार से समझते थे?

वेबर ने आंकड़ों के आधार पर कुछ रोचक तथ्य प्रस्तुत किये हैं। उसके अनुसार उस समय के ज़्यादातर व्यापारी विभिन्न पेशों के विशेषज्ञ और नौकरशाह प्रोटेस्टेंट धर्म के अनुयायी थे। इसके आधार पर वेबर का ध्यान एक महत्वपूर्ण प्रश्न की ओर आकर्षित हुआ, वह यह कि क्या प्रोटेस्टेंट मान्यताओं का आर्थिक व्यवहार पर कोई असर है? वेबर की प्रख्यात रचना द प्रोटेस्टेंट एथिक एंड द *स्पिरिट ऑफ़ कैपिटलिज़्म* के बारे में खंड 4 की इकाई 15 में विस्तृत चर्चा की जा चुकी है। आइए, अब पहले सोचिए और करिए 2 को पूरा करें तथा फिर आर्थिक व्यवहार के निर्धारण में धार्मिक विश्वासों की भूमिका पर नज़र डालें।

सोचिए और करिए 2

इस भाग (21.3) को ध्यानपूर्वक पढ़ें। पूँजीवादी व्यवस्था के विकास में आर्थिक कारकों की भूमिका के बारे में वेबर और मार्क्स के विचारों के बारे में एक पृष्ठ की टिप्पणी लिखें। अगर संभव हो तो अपनी टिप्पणी की अध्ययन केन्द्र में अन्य विद्यार्थियों की टिप्पणियों से तुलना करें।

iii) **धार्मिक/सांस्कृतिक कारक** - प्रोटेस्टेंट नैतिकता का सिद्धांत: सबसे पहले यह समझना आवश्यक है कि "प्रोटेस्टेंट नैतिकता" और पूँजीवादी प्रवृत्ति (जो कि वेबर द्वारा विकसित आदर्श प्ररूप है) के बीच कोई यांत्रिक संबंध नहीं है, न ही प्रोटेस्टेंट नैतिकता पूँजीवाद के विकास का एकमात्र कारण है। वेबर के अनुसार, प्रोटेस्टेंट नैतिकता तर्कसंगत पूँजीवाद के विकास के विभिन्न स्रोतों में से एक है।

कल्विन धर्म प्रोटेस्टेंट पंथों में से एक है। वेबर ने इस पंथ में पूर्व-नियति की चर्चा की। पूर्व-नियति से तात्पर्य इस विश्वास से है कि कुछ लोगों को ईश्वर ने मुक्ति पाने के लिए चुना है। इसके परिणामस्वरूप अनुयायियों ने धार्मिक ग्रंथों को महत्व देना बंद कर दिया। धार्मिक अनुष्ठानों और प्रार्थना का भी महत्व कम हो गया। पूर्व-नियति के सिद्धांत ने बड़ी व्याकुलता और अकेलेपन की भावना पैदा की। प्रारंभिक प्रोटेस्टेंट मत के अनुयायियों ने

अपने पेशेवर क्षेत्र में सफलता के प्रयास किए और ऐसी सफलता को ईश्वर द्वारा अपने "चयन" का संकेत माना। **ईश्वरीय "आह्वान" (calling)** की धारणा के फलस्वरूप अथक परिश्रम तथा समय के सदुपयोग पर ज़ोर दिया गया। लोगों ने अत्यंत अनुशासित और सुसंगठित तरीक़े से जीना शुरू किया। इच्छा-शक्ति के सुसंबद्ध तरीक़े के इस्तेमाल से निरंतर आत्म-नियंत्रण की प्रवृति पनपी जिससे व्यक्तिगत आचार के तर्कसंगत बनाने में मदद मिली। यह प्रवृत्ति व्यापार के तरीक़ों में भी आयी। मुनाफ़े का इस्तेमाल विलासिता के लिए नहीं किया गया बल्कि व्यापार को और आगे बढ़ाने के उद्देश्य से मुनाफ़े का फिर निवेश किया गया। इस तरह, **इहलौकिक आत्मसंयम (this wordly asceticism)** जोकि प्रोटेस्टेंट विचारधारा का महत्वपूर्ण अंग है, रोज़मर्रा के कामकाज को तर्कसंगत बनाने में सहायक हुआ। यह आत्मसंयम अथवा कड़ा अनुशासन और आत्मनियंत्रण साधु-सन्यासियों और पुरोहितों तक सीमित नहीं था। बल्कि यह सामान्य लोगों का भी जीवन-मंत्र

बन गया जिन्होंने स्वयं को तथा अपने परिवेश को अनुशासित करने का प्रयास किया। परिवेश पर नियंत्रण रखना पूँजीवाद का एक महत्वपूर्ण विचार और लक्षण है। इस तरह प्रोटेस्टेंट नैतिकता और उसके दृष्टिकोण ने तर्कसंगत पूँजीवाद को स्वरूप देने में योगदान दिया।

21.3.6 तर्कसंगत पाच्शात्य समाज का भविष्य: "लोहे का पिंजरा"

हमने देखा कि वेबर तर्कसंगति को पाश्चात्य सभ्यता को प्रमुख लक्षण माना है। आर्थिक प्रणाली, राजनैतिक प्रणाली, संस्कृति और रोज़मर्रा के कामकाज को तर्कसंगत बनाने के महत्वपूर्ण परिणाम होते हैं। तर्कसंगतिकरण की इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप **विश्व के प्रति विरक्ति** की भावना पैदा होती है। चूँकि विज्ञान के जरिए लगभग सभी रहस्य, सारे सवाल सुलझाए जा सकते है। इसलिए मानव-जाति का विश्व के प्रति आदरयुक्त भय समाप्त हो जाता है। दैनिक जीवन को तर्कसंगत बनाने से लोग एक घिसे-पिटे तय शुदा तरीके से जीने को मज़बूर हो जाते हैं। जीवन मशीनी, पूर्व निर्धारित, नियमबद्ध और आकर्षणहीन हो जाता है। इससे मानवीय रचनात्मकता कम हो जाती है और लोगों में नीरस एवं नियमबद्ध दिनचर्या को तोड़कर कुछ नया करने का उत्साह कम हो जाता है। मानव जाति अपने ही बनाए कारागार में फंस जाती है। इस "लोहे के पिंजरे" से निकलने का कोई रास्ता नहीं बचता। तर्कसंगत पूँजीवाद और इसकी सहयोगी तर्कसंगत नौकरशाही वाली राज्य-व्यवस्था जीवन की ऐसी पद्धति को स्थायी रूप देते हैं जिसमें मानवीय रचनात्मकता और साहस समाप्त हो जाते हैं। आस-पास के परिवेश का आकर्षण ही समाप्त हो जाता है। इससे मनुष्य मशीन जैसा बन जाता है। बुनियादी तौर से, यह अलगाव पैदा करने वाली प्रणाली है (देखिये चित्र 21.1: भविष्य के बारे में वेबर की कल्पना)।

चित्र 21.1: भविष्य के बारे में वेबर की कल्पना

हमने पढ़ा कि वेबर ने तर्कसंगत पूँजीवाद जैसी जटिल व्यवस्था के विकास की कैसे विवेचना की। वेबर अपनी व्याख्या को आर्थिक और राजनैतिक कारणों मात्र तक सीमित नहीं रखता। वह इन कारकों की अनदेखी भी नहीं करता पर वह तर्कसंगत पूँजीवाद में निहित मनोवैज्ञानिक अभिप्रेरणा (psychological motivations) पर ज़ोर देता है। ये अभिप्रेरणाएं परिवेश के बारे में बदलते दृष्टिकोण से पैदा हुई हैं। मानव-जाति ने स्वयं को प्रकृति के चक्र का असहाय शिकार न मानते हुए अपने मन पर और बाहरी दुनिया पर नियंत्रण पाने की नैतिकता को अपनाया है। इस बदले हुए दृष्टिकोण को बनाने में प्रोटेस्टेंट पंथों जैसे कि कल्विनधर्म के विचार सहायक थे। ईश्वरीय आव्हान और पूर्व-नियति की परिकल्पनाओं ने अनुयायियों को दुनिया में फलने-फूलने और इस पर नियंत्रण पाने की प्रेरणा दी। इससे एक ऐसी आर्थिक नैतिकता विकसित हुई जिसमें व्यक्तिगत जीवन और व्यापार को तर्कसंगत बनाने पर ज़ोर दिया गया। काम का बोझ केवल ज़रूरत न मान कर पवित्र कर्तव्य माना गया। ईश्वरीय आव्हान की धारणा के कारण अनुशासित श्रमिकों का दल निर्मित हुआ जिसने पूँजीवाद के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इस तरह,

वेबर ने अनेक स्तरों पर पूँजीवाद का विश्लेषण किया। उसने बदलती भौतिक और राजनैतिक स्थितियों के साथ-साथ बदलते जीवन-मूल्यों तथा विचारों के आधार पर यह विश्लेषण किया।

वेबर भविष्य की निराशापूर्ण तस्वीर पेश करता है। आर्थिक-राजनैतिक ढाँचे में तर्कसंगति से जीवन एक नीरस दिनचर्या में ढल जाता है। मानव-जाति के सामने प्रकृति के सभी रहस्य खुल जाते हैं, अत: जीवन का रोमांच तथा आकर्षण समाप्त हो जाता है इस तरह मानव-जाति अपने ही बनाये "लोहे के पिंजरे" में फंस जाती है।

बोध प्रश्न 3

i) निम्नलिखित प्रश्नों में प्रत्येक प्रश्न का तीन पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

क) तर्कसंगत पूँजीवाद के विकास के लिए तर्क-विधिक व्यवस्था क्यों ज़रूरी है?

.....

.....

.....

ख) पूर्व-नियति की धारणा से प्रोटेस्टेंट धर्म के लोगों का काम किस प्रकार प्रभावित हुआ?

.....

.....

.....

ii) निम्न वाक्यों में से "सही" या "ग़लत" बताइए।

क) वेबर के अनुसार पूँजीवाद के उदय का सबसे महत्वपूर्ण कारण नौकरशाही पर आधारित राज्य का पनपना है। सही/ग़लत

ख) पूर्व नियति की धारणा ने ज्यादातर प्रोटेस्टेंट धर्म के लोगों को प्रार्थना और धर्मग्रंथों के प्रति समर्पित जीवन बिताने के लिए प्रेरित किया। सही/ग़लत

ग) वेबर के अनुसार तर्कसंगत पाश्चात्य समाज ने मानव जाति को नीरस दिनचर्या से मुक्ति दिलाई। सही/ग़लत

21.4 मार्क्स और वेबर के विचारों की तुलना

हमने पूँजीवाद के बारे में कार्ल मार्क्स और मैक्स वेबर के विचारों का अध्ययन किया। इन दोनों के दृष्टिकोण में आपने अनेक समानताएं और अंतर पाये होंगे। आइए, इन समानताओं और अंतर का अब संक्षेप में विवेचन करें।

21.4.1 दृष्टिकोण में अंतर

इकाई 18 में आपने इन दोनों चिंतकों की विचार पद्धतियों के अंतर के बारे में पढ़ा। कार्ल मार्क्स अपने विश्लेषण में "समाज" को इकाई मानता है। इस दृष्टिकोण को हमने "सामाजिक यथार्थवाद" का नाम दिया है। इसके अनुरूप मार्क्स पूँजीवाद को समाज का एक ऐतिहासिक चरण मानता है।

दूसरी ओर वेबर समाज का अध्ययन उन व्याख्यात्मक अर्थों के संदर्भ में करता है जिनके द्वारा कर्त्ता या व्यक्ति अपने परिवेश को समझते हैं। वह सामाजिक स्थितियों की व्याख्या कर्त्ता के दृष्टिकोण के संदर्भ में करता है। व्याख्यात्मक दृष्टिकोण के आधार पर वह सामाजिक यथार्थ को समझने का प्रयास करता है। जैसा कि इस इकाई में बताया गया है वेबर व्यक्तियों की

मनोवैज्ञानिक अभिप्रेरणाओं पर ध्यान केंद्रित कर पूँजीवाद का अध्ययन करता है। इसके लिए वह लोगों की विश्वदृष्टि की और उनके कार्यकलापों के साथ जुड़े अर्थ की व्याख्या करता है।

21.4.2 पूँजीवाद का उदय

मार्क्स पूँजीवाद के उदय को उत्पादन की बदलती हुई प्रणाली के संदर्भ में देखता है। उसके अनुसार, आर्थिक प्रणाली या भौतिक क्षेत्र वह मूलभूत ढांचा अथवा अधोसंरचना (infrastructure) है जिससे संस्कृति, धर्म, राजनीति जैसी उप-प्रणालियों अर्थात् अधिसंरचना (super structure) का स्वरूप निर्धारित होता है। उसके अनुसार, सामाजिक व्यवस्था का परिवर्तन मूलतः आर्थिक परिवर्तन होता है। इस तरह, पूँजीवाद के उदय को उत्पादन के साधनों में बदलाव के आधार पर समझाया गया है। इस बदलाव का कारण है पिछले ऐतिहासिक चरण अर्थात् सामंतवाद का विरोधाभास।

वेबर का विश्लेषण कहीं अधिक जटिल है जैसा कि आपने पढ़ा वह तर्कसंगत पूँजीवाद के उदय में आर्थिक कारणों की अनदेखी नहीं करता। लेकिन वह व्यक्तियों के दृष्टिकोण, अभिप्रेरणाओं और कार्यों को एवम् उनकी व्याख्या को महत्वपूर्ण मानता है। व्यक्तियों के दृष्टिकोण, नैतिक मूल्यों, विश्वासों और भावनाओं से उनके कार्य निर्देशित होते हैं और इन कार्यों में आर्थिक कार्य भी शामिल हैं। इसलिए तर्कसंगत पूँजीवाद के उदय के कारणों को समझने के लिए वेबर नैतिक मूल्यों की उस प्रणाली पर ध्यान देता है, जिसकी वजह से तर्कसंगत पूँजीवाद पनपा। उसकी पुस्तक द *प्रोटेस्टेंट एथिक एंड द स्पिरिट ऑफ़ कैपिटलिज़्म* में यही दृष्टिकोण अपनाया गया है।

कुछ लोगों का विचार है कि वेबर के विचार मार्क्स से एकदम विपरीत है। उनका कहना है कि मार्क्स आर्थिक प्रणाली को धर्म से ज़्यादा महत्वपूर्ण मानता है जबकि वेबर धर्म को आर्थिक प्रणाली से ज्यादा महत्व देता है। मार्क्स और वेबर के विचारों की तुलना का यह **सतही और सपाट** तरीक़ा है। यह कहना ज़्यादा उचित है कि वेबर ने अपने विश्लेषण में नये आयाम और नये दृष्टिकोण शामिल करके मार्क्स के विचारों को पूर्णता दी ताकि पूँजीवाद जैसी जटिल धारणा के विविध पक्षों का ज़्यादा गहराई से अध्ययन हो सके।

मार्क्स तथा वेबर के विचारों की तुलना हेतु सोचिए और करिए 3 को पूरा करें।

सोचिए और करिए 3

मार्क्स आर्थिक प्रणाली को धर्म से ज़्यादा प्रमुखता देता है जबकि वेबर धर्म को आर्थिक प्रणाली से ज़्यादा महत्वपूर्ण मानता है। क्या आप इस बात से सहमत हैं? साथी विद्यार्थियों से भी विचार-विमर्श करें और अपने विचारों के समर्थन में एक पृष्ठ की टिप्पणी लिखें।

21.4.3 पूँजीवाद के परिणाम और पूँजीवादी व्यवस्था को बदलने का उपाय

कार्ल मार्क्स के अनुसार पूँजीवादी व्यवस्था श्रमिकों के शोषण, अमानवीय और समाज के अलगाव की प्रतीक है। यह असमानता पर आधारित है और इसका बिखर कर नष्ट हो जाना तय है। इस व्यवस्था का पतन इसके अपने ही अंतर्विरोधों से होगा। सर्वहारा वर्ग क्रांति करेगा और मानवीय इतिहास का नया चरण यानी साम्यवाद का उदय होगा। वेबर भी मानता है कि तर्कसंगत पूँजीवाद मूलतः मानवीय समाज में अलगाव पैदा करता है। तर्कसंगत पूँजीवाद और नौकरशाही तर्कसंगत राज्य-प्रणाली साथ-साथ चलते हैं। इससे मानवीय जीवन एक ढर्रे पर आ जाता है, लोग समाज और विश्व से विरक्त हो जाते हैं। लेकिन भविष्य के प्रति वेबर का दृष्टिकोण निराशावादी है (देखिए चित्र 21.1 : भविष्य के बारे में वेबर की कल्पना)। मार्क्स के विपरीत वह मानता है कि क्रांति होने की या व्यवस्था के नष्ट हो जाने की कोई संभावना नहीं है। उसके अनुसार पूँजीवाद की मूलभूत धारणा तर्कसंगति आज की दुनिया की तमाम मानवीय गतिविधियों के लिए बहुत ज़रूरी

है। विज्ञान और तकनीकी की प्रगति, प्रकृति की शक्तियाँ तथा विश्व पर नियंत्रण करने की मानवीय इच्छा ऐसी प्रक्रियाएं हैं, जिन्हें पीछे नहीं लौटाया जा सकता। इसलिए क्रांतियों और विद्रोहों से समाज की प्रगति की दिशा में मूलभूत परिवर्तन नहीं लाया जा सकता।

मार्क्स पूँजीवाद की तर्कहीनता और विरोधों पर अधिक ध्यान देता है। उसके अनुसार तर्कहीनता और विरोधों के कारण परिवर्तन आता है। वेबर तर्कसंगति को अधिक महत्व देता है। यही तर्कसंगति लोगों को "लोहे के पिंजरे" में क़ैद कर देती है।

इस तरह, पूँजीवाद के बारे में मार्क्स और वेबर के दृष्टिकोणों में अंतर है। मार्क्स समाज़ के ऐतिहासिक चरणों के आधार पर पूँजीवाद का अध्ययन करता है। पूँजीवाद पिछले चरण के अंतर्विरोधों का परिणाम है और इसके साथ ही उत्पादन की नयी प्रणाली जन्म लेती है।

वेबर भी आर्थिक कारकों पर ज़ोर देता है। लेकिन पूँजीवाद की उसकी व्याख्या ज़्यादा जटिल है। अपनी समाजशास्त्रीय पद्धति अर्थात् अंतर्दृष्टि के अनुरूप वह व्यक्तिपरक अर्थो, मूल्यों और मान्यताओं पर ज़ोर देता है। दोनों ही विचारक मानते हैं कि मानवीय समाज के लिए पूँजीवाद का प्रभाव हानिप्रद है परंतु भविष्य के प्रति दोनों के दृष्टिकोण में बहुत अंतर है। मार्क्स क्रांति तथा परिवर्तन का संदेश देता है पर वेबर ऐसी कोई उम्मीद नहीं रखता है। मार्क्स के अनुसार, पूँजीवाद का आधार तर्कहीनता है। वेबर के राय में, पूँजीवाद तर्कसंगति का ही परिणाम है। यही दोनों के विचारों में अंतर का मुख्य मुद्दा है। अब इकाई के अंत में बोध प्रश्न 4 को पूरा करें।

बोध प्रश्न 4

i) निम्नलिखित वाक्यों के ख़ाली स्थानों में उचित शब्द लिखिए।

   क) मार्क्स ..... को अपने विश्लेषण की इकाई मानता है इस दृष्टिकोण को ..... कहते हैं।

   ख) वेबर सामाजिक स्थिति को ..... के आधार पर समझाने का प्रयास करता है।

   ग) वेबर के अनुसार पूँजीवाद के मूल में तर्कसंगति निहित है, पर मार्क्स की राय में इसका आधार ..... तथा ..... है।

   घ) मार्क्स की राय में आर्थिक प्रणाली वह आधार अथवा ..... है, जिससे ..... का स्वरूप निर्धारित होता है।

ii) मार्क्स और वेबर ने पूँजीवाद के उदय के जो कारण बताए, उनकी तुलना करें। उत्तर छः पंक्तियों में दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

21.5 सारांश

इस इकाई में हमने पूँजीवाद के संदर्भ में मार्क्स और वेबर के दृष्टिकोण के बारे मे पढ़ा। इन दोनों विचारकों के जीवन-काल में पूँजीवादी व्यवस्था विकसित हुई।

पहले भाग में, हमने मार्क्स के प्रमुख विचारों पर चर्चा की। हमने पढ़ा कि कैसे मार्क्स ने पूँजीवाद को मानवीय इतिहास के एक चरण के रूप में देखा। हमने टॉम बॉटोमार द्वारा बताए गए पूँजीवाद के लक्षणों का विवरण किया। हमने मार्क्स के वर्गों के ध्रुवीकरण के विचार का भी अध्ययन किया जिसके परिणामस्वरूप सर्वहारा क्रांति होगी और पूँजीवाद का विनाश होगा।

अगले भाग में, हमने पूँजीवाद के बारे में मैक्स वेबर के विचारों का विस्तृत अध्ययन किया। हमने देखा कि तर्कसंगित किस प्रकार पाश्चात्य सभ्यता के हर क्षेत्र में छायी हुई है। हमने आर्थिक प्रणाली की तर्कसंगतिकरण की प्रक्रिया का अध्ययन किया जिससे तर्कसंगत पूँजीवाद पनपा। हमने परंपरागत और तर्कसंगत के अंतर को समझा। आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक, धार्मिक कारकों के आधार पर पूँजीवाद के उदय के बारे में वेबर के विचारों पर चर्चा की गई। फिर हमने पाश्चात्य सभ्यता के भविष्य के प्रति वेबर के विचारों की संक्षिप्त चर्चा की।

अंतिम भाग में, हमने दोनों विचारकों की धारणाओं की संक्षेप में तुलना की। हमने यह भी पढ़ा कि पूँजीवाद के प्रति दोनों के दृष्टिकोण तथा इसके पनपने के कारणों तथा भविष्य के बारे में दोनों के विचारों में क्या-क्या अंतर है। निष्कर्ष रूप में हमने देखा कि दोनों ही पूँजीवाद को अलगाव पैदा करने वाली व्यवस्था मानते हैं।

21.6 शब्दावली

बही खाता	लागत तथा मुनाफें का लेखा-जोखा
नौकरशाही पर आधारित तर्क-विधिक राज्य	यह आधुनिक समाजों का एक प्रमुख लक्षण है। इसमें संहिताबद्ध कानून और सरकार का तर्कसंगत संगठन होता है।
ईश्वरीय आह्वान (calling)	किसी कार्य या पेशे को ऐसा पवित्र कर्त्तव्य मान कर करना, जिसके लिए स्वयं ईश्वर ने व्यक्ति-विशेष को निर्देश दिया हो।
कार्टेल (cartel)	उद्योगपतियों का ऐसा समूह, जो मिलकर बाज़ार पर एकाधिकार या पूर्ण नियत्रंण कर लेता है।
विश्व के प्रति विरक्ति (disenchantment of the world)	विश्व के प्रति आदर-भाव की समाप्ति। लोग विश्व से अब आकर्षित और चकित नहीं होते। वे इसकी शक्तियों तथा रहस्यों को जानकर उन पर नियंत्रण कर लेते हैं, अत: उन्हें यह आकर्षक या रोमांचक नहीं लगता।
व्याख्यात्मक दृष्टिकोण (interpretative understanding)	वेबर के फर्स्टेहन की पद्धति अंतर्दृष्टि जिसमें सामाजिक घटनाओं का अध्ययन कर्त्ता के दृष्टिकोण के आधार पर किया गया है।
मशीनी या एककारणीय संबंध (monocausal relationship)	एक ही कारण पर आधारित संबंध जैसे ऊष्मा से पानी गर्म होता है एककारणीय व्याख्या है, जहाँ ऊष्मा को पानी गर्म होने का एकमात्र कारण बताया गया है।
वर्गो का ध्रुवीकरण (polarisation of classes)	वर्गो के बीच अंतर इतना बढ़ जाता है कि वे पृथ्वी के दो "ध्रुवों" (poles) की तरह एक-दूसरे के विपरीत हो जाते हैं। उनके हित, विचार, भौतिक स्थिति सभी कुछ एक दूसरे के विपरीत हो जाते हैं।
सतही और सपाट (simplistic)	बड़ा ही सरल, विश्लेषण जिसमें गहन तथा जटिल पक्षों की अनदेखी कर दी गई है। जैसे "सभी नशीली दवाइयां लेने वाले

युवक/युवतियाँ टूटे परिवारों से आते हैं" सपाट व्याख्या है। इसमें अन्य कारणों, जैसे दोस्तों के असर, ग़रीबी आदि कारकों की अनदेखी की गई है।

स्टॉक, शेयर या बांड

कम्पनी अथवा उद्यम शेयर, स्टॉक और बांड जारी करक आम जनता को व्यापारिक पूँजी में अंशदान को आमंत्रित करते हैं। इन तरीकों से जन-साधारण का कंपनी की पूँजी में एक छोटा हिस्सा हो जाता है और उसी अनुपात में लाभांश (डिविडेंड) प्राप्त होता है।

इहलौकिक आत्मसंयम (this worldly asceticism)

आत्मसंयम का मतलब दैनिक जीवन में कड़े अनुशासन से है। वेबर के अनुसार प्रारंभिक प्रोटेस्टेंट धर्म को मानने वालों की यह प्रमुख विशेषता थी। वेबर ने हिंदू-धर्म जैसी पारलौकिक आत्मसंयम (other worldly asceticism) से इसकी तुलना की। इस प्रवृति में लोग प्रायश्चित द्वारा विश्व का त्याग करने के लिए स्वयं को संयमित करते हैं।

21.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

बॉटोमोर, टॉम (संपादित) (1973). *डिकशनरी ऑफ मार्क्सिस्ट थॉट*. ब्लैकवेल: ऑक्सफ़ोर्ड

कॉलिंस रेंडल (1986). मैक्स वेबर - *ए स्कैलेटन की*. सेज पब्लिकेशंस: बेवर्लीहिल्स

फ्रांएड, जूलिएन (1972), *सोशियोलॉजी ऑफ मैक्स वेबर*, पेंगुइन: लंदन

21.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

i) क) ग़लत
   ख) ग़लत
   ग) ग़लत
   घ) ग़लत
   च) ग़लत

ii) क) मार्क्स के अनुसार सर्वहारा की क्रांति से नयी सामाजिक व्यवस्था "साम्यवाद" का जन्म होगा। श्रमिक उत्पादन के साधनों के स्वामी और नियंत्रक होंगे। इस प्रकार, पिछले चरणों के अंतर्विरोध दूर हो जाएंगे।

   ख) पूँजीवादी चरण में वस्तुओं का विनिमय मुद्रा में होता है। पूँजीवादी प्रणाली में मुद्रा ही समाज को बांधने वाली शक्ति है। इसलिए बैंको तथा वित्तीय संस्थानों की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है।

   ग) पूँजीवादी व्यवस्था में बहुत अधिक असमानता होती है। पूँजीपति उत्पादन के साधनों के स्वामी और नियंत्रक होते हैं जबकि श्रमिक अपनी श्रम-शक्ति बेचने को मजबूर होते हैं। इन दो वर्गों के बीच अंतर बढ़ता जाता है और ध्रुवीकरण की स्थिति आ जाती है।

बोध प्रश्न 2

i) तर्कसंगतिकरण से वेबर का अभिप्राय दुनिया और मानवीय जीवन-दोनों के संगठन से है। बाहरी दुनिया पर नियंत्रण किया जाना था और मानवीय जीवन को ऐसे व्यवस्थित किया जाना था ताकि ज़्यादा से ज़्यादा कुशलता और उत्पादकता बढ़े। कुछ भी प्रकृति या भाग्य के भरोसें नहीं छोड़ा गया।

ii) परंपरागत पूँजीवाद में व्यापार को जुआ समझा जाता था। बिक्री की वस्तुएँ सीमित और अक्सर बहुत क़ीमती होती थीं। खरीदार बहुत कम थे। विदेशी व्यापार जोखिम भरा था। व्यापार में भी जोखिम और अनिश्चितता थीं।

बोध प्रश्न 3

i) क) तर्कविधिक व्यवस्था से तात्पर्य सभी के लिए समान वैधानिक प्रणाली से है। इसमें व्यक्तिगत कर्तव्यों और अधिकारों को लिखित रूप में संहिताबद्ध किया जाता है। इससे व्यापारिक कारोबार करना आसान हो जाता है और पूँजीवाद के विकास में मदद मिलती है।

ख) पूर्व-नियति की धारणा से अनुयायियों के मन में बड़ी व्याकुलता और असुरक्षा पैदा हुई। उन्होंने अपने ईश्वरीय चयन के संकेतों को, प्रार्थना और धार्मिक अनुष्ठानों में नहीं, बल्कि पेशे की सफलता में तलाशा। दुनिया में सफलता के लिए उन्होंने कड़ी मेहनत की ओर अतिरिक्त लाभ को फिर व्यापार में ही लगाया ताकि उत्पादन और बढ़ाने में इसका इस्तेमाल हो सके।

ii) क) ग़लत

ख) ग़लत

ग) ग़लत

बोध प्रश्न 4

i) क) समाज, सामाजिक यथार्थवाद

ख) व्यक्तिपरक अर्थ

ग) तर्कहीनता, अंतर्विरोध

घ) अधोसंरचना, अधिसंरचना

ii) कार्ल मार्क्स पूँजीवाद के उदय की व्याख्या उत्पादन की बदलती प्रणाली के संदर्भ में करता है। पिछली प्रणाली, अर्थात् सामंतवाद के अंतर्विरोधों से नयी आर्थिक प्रणाली, अर्थात् पूँजीवाद का उदय होता है। इस प्रकार मार्क्स की व्याख्या मूलतः आर्थिक आधार पर थी। वेबर ने आर्थिक कारकों की अनदेखी तो नहीं की, पर साथ ही उसने राजनैतिक और धार्मिक कारकों की भी चर्चा की। उसकी राय में पूँजीवाद के विकास को समझने के लिए मनोवैज्ञानिक अभिप्रेरणाओं तथा व्यक्तिगत दृष्टिकोण को भी जानना जरूरी है। इस तरह वेबर का विश्लेषण बहु-स्तरीय तथा ज़्यादा जटिल है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

अ)

अल्टशुलर, रिचर्ड (सम्पा.) 1998. *द लिविंग लेगसी आफ़ मार्क्स, दर्खाइम एण्ड वेबर: एप्लीकेशन्स एण्ड एनालिसीस ऑफ़ क्लासिकल सोशियोलॉजिकल थियरी बाइ मॉडर्न साइंटिस्टस.* गॉर्डियन बुक्स: न्यूयॉर्क

आरों, रेमों, 1970. *मेन करेंट्स इन सोशियोलॉजिक्ल थॉट.* भाग 1 और 2, पेंगुइन: लंदन

बीमिश, रॉब 1992. *थियरी एण्ड मैथड्स: मार्क्स, मैथड एण्ड डिवीज़न ऑफ़ लेबर.* यूनीवर्सिटी ऑफ़ इलिनोइ प्रेस: अर्बाना

बॉटोमोर, टॉम, (सं.) 1973. *डिक्शनरी ऑफ़ मार्क्सिस्ट थॉट.* ब्लैकवेल: ऑक्सफ़ोर्ड

बॉटोमोर, टॉम और रूबेल, मैक्सिमिलियन, (सं.) 1986. *कार्ल मार्क्स - सिलेक्टैड राइटिंग्स इन सोशियोलॉजी एण्ड सोशल फिलॉसोफ़ी.* पेंगुइन: लंदन

कॉलिन्स, रैंडल, 1986. *मैक्स वेबर -- स्केलेटन की.* सेज पब्लिकेशंस: बेवर्ली हिल्स

कॉलिन्स, रैंडल, 1985. *थ्री सोशियोलॉजिकल ट्रेडिशन्स.* ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस: ऑक्सफ़ोर्ड

कोज़र, लुविस, 1971. *मास्टर्स ऑफ़ सोशियोलॉजिकल थॉट -- आइडियाज़ इन हिस्टोरिकल एण्ड सोशल कॉंटेक्स्ट.* हरकोर्ट ब्रेस जोवानोविच: न्यूयार्क

दर्खाईम, एमिल, 1984. *डिविज़न ऑफ़ लेबर इन सोसाइटी.* मैकमिलन लंदन (पुन: मुद्रित)

दर्खाईम, एमिल, 1964. *एलिमेंटरी फॉर्म्स ऑफ़ द रिलिजिस लाइफ.* ऐलन एण्ड अन्विन: लंदन (पुन: मुद्रित)

दर्खाईम, एमिल, और मॉस, मार्सेल, 1963. *प्रिमिटिव क्लासिफ़िकेशन.* यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस: शिकागो (पुन: मुद्रित)

दर्खाईम, एमिल, 1966. *रूल्स ऑफ़ सोशियोलॉजिकल मैथड.* फ्री प्रेस: ग्लेनको (पुन: मुद्रित)

दर्खाईम, एमिल, 1972. *सुइसाइड: ए स्टडी इन सोशियोलॉजी.* रूटलेज एण्ड केगन पॉल: लंदन (पुन: मुद्रित)

फ्रॉएंड, जूलियन. 1972. *द सोशियोलॉज़ी ऑफ़ मैक्स वेबर.* पेंगुइन: लंदन

गिड्डनस, एंथनी, 1978. *दुर्खाइम. हार्वेस्टर* प्रेस: हैसॉक्स

जोन्स, रॉबर्ट एलन, 1986. एमिल दर्खाइम-*ऐन इंट्रोक्शन टु फ़ोर मेजर वर्क्स.* सेज पब्लिकेशन्स: बेवर्ली हिल्स

कंत, इमानुएल, 1950. *"क्रिटीक ऑफ़ प्योर रीज़न* ह्युमैनिटीज़: न्यूयार्क

कोलाकॉवस्की, लेज़ेक, 1978. *मेन करेंट्स ऑफ़ मार्क्सिज़्म--इट्स ओरिजिन्स,* ग्रोथ एण्ड डिसोल्यूशन. भाग 1, ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस: ऑक्सफ़ोर्ड

लॉकवुड, डेविड 1992. *सॉलिडैरिटी एंड शिज़्म: "द प्रॉब्लम ऑफ़ डिसऑर्डर इन दर्खाइमियन एंड मार्किसस्ट सोशियॉलाजी.* क्लैरंडन प्रैस: ऑक्सफ़र्ड

मार्क्स, कार्ल, 1958. *कैपिटल: ए क्रिटिकल अनौलिसिस ऑफ़ कैपिटलिस्टिक प्रोडक्शन.* भाग I और II फारेन लैंग्वेज़िज़ पब्लिशिंग हाउस: मॉस्को

मार्क्स, कार्ल, और एंगल्स, एफ. 1938. *जर्मन आइडियॉलोजी.* भाग I और II लॉरेन्स एण्ड विसहॉर्ट: लंदन

मैकिंटॉश, इयन (सम्पा.) 1997. *क्लासिकल सोशियोलॉजिकल थियरी: ए रीडर.* न्यूयॉर्क यूनीवर्सिटी प्रैस: न्यूयॉर्क

मॉस, मार्सेल, 1954. *द गिफ्ट: फ़ार्म्स एण्ड फंक्शन्स ऑफ़ एक्सचेंज इन आर्केइक सोसायटीज़.* यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस: शिकागो

माउस, मार्सेल और ह्यूबर्ट, हैनरी, 1964. *सैक्रिफ़ाइस: इट्स नेचर एण्ड फ़ंक्शन.* यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस: शिकागो

स्मिथ, एडम, 1966. *द थ्योरी ऑफ़ मॉरल सेंटिमेंट्स.* केली:न्यूयॉर्क

स्मिथ, एडम, 1950. *ऐन इंक्वायरी इनटु नेचर एण्ड कॉज़िज़ ऑफ़ द वैल्थ नेशन्स.* मेथ्युएन: लंदन

वेबर मैक्स, 1951. *द रितीज़न ऑफ़ चाइना. कन्फ़्यूशियनिज़्म एण्ड टाओइज़्म.* फ्री प्रेस: ग्लेनको

वेबर मैक्स, 1958. *द प्रॉटेस्टेंट एथिक एण्ड द स्पिरिट ऑफ़ कैपिटलिज़्म.* स्क्रिबनर: न्यूयार्क

वेबर मैक्स, 1958. *द रैशनल एण्ड सोशल फ़ाउँडेशन्स ऑफ़ म्यूज़िक.* सदर्न इलिनॉय यूनिवर्सिटी प्रेस: कार्बनडेल

वेबर मैक्स, 1968. *द रिलीज़न ऑफ़ इंडिया, द सोशियोलॉजी ऑफ़ हिदुइज़्म एण्ड बुद्धिज़्म.* फ्री प्रेस: ग्लेनको .

वेबर मैक्स, 1966. *द सोशियोलॉजी ऑफ़ रिलीज़न.* मेथ्युएन: लंदन

ब) हिंदी में उपलब्ध पुस्तकें

श्रीवास्तव, सुरेन्द्र कुमार, *समाज के मूल विचारक.* उत्तरप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी: लखनऊ, क्रमांक: 541

बॉटोमोर, टॉम, 1975. *मार्क्सवादी समाजशास्त्र.* अनुवादक सदाशिव द्विवेदी. मैकमिलन कंपनी ऑफ़ इंडिया लिमिटेड: नई दिल्ली

यशपाल, 1983. *मार्क्सवाद.* लोकभारती प्रकाशन: इलाहाबाद

दर्खाइम, एमिल, 1982. *समाजशास्त्री पद्धति के नियम.* अनुवाद हरिश्चंद्र उप्रेती. राजस्थान हिंदी ग्रंथ. अकादमी: जयपुर

वर्मा, ओमप्रकाश, 1983-84. *दर्खाइम एक अध्ययन.* विवेक प्रकाशन: दिल्ली